रंगभेद के खिलाफ बैटिंग

भारतीय क्रिकेट टीम के उभरते सितारे अभिनव मुकुंद ने रंगभेद और नस्लभेद से जुड़ी पुरानी बहस को नया तेवर दे दिया है। बुधवार को ट्विटर के जरिए उन्होंने उन लोगों को पत्र लिखा जो खेल के बजाय उनके रंग को लेकर उलटी-सीधी टिप्पणियां करते रहते हैं। श्रीलंका गई भारतीय क्रिकेट टीम के सदस्य अभिनव ने 2011 में अपने पहले ही टेस्ट की दूसरी पारी में 81 रन बनाए थे। तब से अब तक उनका टेस्ट करियर भले उतार-चढ़ाव वाला रहा हो, लेकिन बतौर क्रिकेटर उनका जज्बा काबिलेतारीफ है। बहरहाल, अभी उनका मसला उनके खेल से बिल्कुल अलग है। वे तो अपने सांवलेपन, यानी एक ऐसी चीज को लेकर की जाने वाली टिप्पणियों पर सवाल उठा रहे हैं, जिस पर किसी भी व्यक्ति का कोई वश नहीं होता। हाल के दिनों में यह सवाल कई अन्य सिलेब्रिटीज भी उठाते रहे हैं। ऐक्टर अभय देओल ने पिछले दिनों फेयरनेस क्रीम का विज्ञापन करने वाली शख्सियतों को आड़े हाथों लिया था। दिलचस्प बात है कि भारतीय समाज में जड़ जमाती इस वैश्विक समस्या से लड़ने की सबसे मजबूत जमीन भी हमारा ही समाज मुहैया कराता है। यहां हर घर में, भाई-बहनों में भी कोई गोरा तो कोई सांवला और कोई काला है। ईश्वर के जिन सर्वश्रेष्ठ इंसानी रूपों की हमने कल्पना की, उन राम-कृष्ण का रंग भी सांवला रखा। एक शिव का स्वरूप अगर कपूर सा गोरा है, तो भी उनमें रंग को लेकर हद दर्जे की उदासीनता दिखती है। वह अपने शरीर पर भस्म ही लगाए रहते हैं। बावजूद इसके, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि समकालीन समाज के एक बड़े हिस्से में गोरेपन को लेकर एक क्रेज दिखता है। इसके पीछे कुछ भूमिका अंग्रेजी राज की भी हो सकती है, पर इसका सबसे बड़ा कारण ब्यूटी इंडस्ट्री की वह मुहिम है, जिसने गोरेपन की श्रेष्ठता को स्थापित करते हुए किस्म-किस्म के विज्ञापनों के जरिए आम लोगों में इसके प्रति आकर्षण पैदा किया। बहरहाल, चाहे जैसे भी आई हो, पर अभी के भारतीय समाज में यह प्रवृत्ति मौजूद है और इसका मुकाबला करने के अलावा और कोई रास्ता हमारे पास नहीं है। अभिनव मुकुंद जैसे हमारे नए नायक इसी लड़ाई को आगे बढ़ा रहे हैं।

वैज्ञानिक सोच का हो तर्कशील समाज

आज के वैज्ञानिक युग में चोटी कांड की अफवाह जिस तीव्र गति से उत्तर भारत में फैली है, इससे देश के नागरिकों की वैज्ञानिक मनोवृत्ति का मुद्दा उठ खड़ा हुआ है। पिछले दिनों आगरा में जिस प्रकार एक बुजुर्ग महिला की चोटी काटने के शक पर हत्या कर दी गई, उससे अब यह संपूर्ण मामला किस तरह खतरनाक हो गया है,उसका अंदाजा लगाया जा सकता है। जल्द ही इस पर नियंत्रण नहीं पाया गया तो इस प्रकार की वीभत्स हिंसक घटनाओं की पुनरावृत्ति संभावित है। इन घटनाओं को मूलतः मास हिस्टीरिया कहा जाता है, जिसमें आबादी का बड़ा वर्ग अफवाह या अंधविश्वास को स्वीकार करने लगता है। इस पर रोक हेतु तथा भविष्य में देश इस प्रकार की अफवाहों की चपेट में न आए, इसके लिए वैज्ञानिक मनोवृत्ति का विकास देश के नागरिकों के मध्य अपरिहार्य है। वैज्ञानिक मनोवृत्ति व्यक्ति की चिंतन प्रक्रिया का एक ढंग है जो आस्था तथा श्रद्धा के स्थान पर तर्क तथा संदेह को, सुनी-सुनाई बातों के स्थान पर अनुभव को तथा परंपरा के स्थान पर 'प्रयोग' को महत्व देता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण या मनोवृत्ति ही आधुनिक युग को मध्य युग से पृथक करती है। वैज्ञानिक मनोवृत्ति एक ऐसी मनोवृत्ति है, जिसमें कोई व्यक्ति किसी बात का परीक्षण वैज्ञानिक आधारों पर करता है। भारत में जिस तरह लोक भ्रम आसानी से व्यापक पैमाने पर फैल जाता है,उससे स्पष्ट है कि अभी भारतीय समाज में वैज्ञानिक मूल्यों का गहराई से विस्तार होना शेष है। आगरा में हुई घटना दरअसल उसी मध्ययुगीन बर्बरता को प्रतिबिंबित करती है। इसलिए इस प्रकार के लोक भ्रम का प्रथमतः कोई स्थान नहीं होना चाहिए, अगर हो भी जाए तो शीघ्रता से निवारण होना चाहिए।

ट्रंप की अफगान नीति के यक्ष प्रश्न

ट्रंप प्रशासन दुविधा में है और राष्ट्रपति ने अफगानिस्तान में 'विजय' हासिल न कर पाने के लिए अपने सैन्य कमांडर जनरल निकलसन को बेवजह दोषी ठहराया है। इससे उस देश के प्रति अमेरिकी नीति की दशा-दिशा को लेकर काबुल की चिंता बढ़ना स्वाभाविक है, जिस देश में तालिबान शासन की देखरेख में 9/11 के आतंकी हमलों की साजिश रची गई।

लेकिन ऐसे भी संकेत हैं कि राष्ट्रपति की दुविधा के बावजूद विदेश विभाग, पेंटागन और यहां तक कि व्हाइट हाउस के कर्मचारी इस बात के प्रति स्पष्ट हैं कि आगे क्या किया जाना चाहिए। इसलिए ऐसी संभावना है कि ट्रंप अमेरिकी कांग्रेस तथा उनके अपने प्रशासन के पेशेवरों द्वारा सुझाई नीतियों पर उसी तरह आगे बढ़ेंगे, जैसा कि रूस, खाड़ी के अरब देशों और उत्तर कोरिया के साथ संबंधों को लेकर किया गया। सीनेट की विदेश संबंध समिति के अध्यक्ष सीनेटर जॉन मैक्केन के नेतृत्व में अमेरिकी कांग्रेस अफगानिस्तान की सरकार द्वारा अमेरिका की ओर से दी जा रही आर्थिक मदद के इस्तेमाल के तरीके पर करीब से नजर रखने का प्रस्ताव लाने जा रही है।

अमेरिकी कानून के तहत पहली बार 'पाकिस्तान पर तब तक धीरे-धीरे राजनयिक, सैन्य तथा आर्थिक प्रतिबंध लगाने का प्रस्ताव है, जब तक कि वह तालिबान तथा हक्कानी नेटवर्क सहित सभी आतंकी तथा विद्रोही गुटों को समर्थन तथा आश्रय प्रदान करना बंद नहीं कर देता।' इसके तहत अमेरिकी मदद को 'पाकिस्तान द्वारा सभी आतंकी तथा विद्रोही समूहों को समर्थन बंद करने और अफगानिस्तान में जारी संघर्ष के शांतिपूर्ण समाधान में रचनात्मक भूमिका निभाने' से जोड़ा गया है। राजनयिक तौर पर इसके तहत 'अफगानिस्तान, पाकिस्तान, चीन, भारत, ताजिकिस्तान, उज्बेकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान तथा अन्य देशों के साथ क्षेत्रीय वार्ता के लिए लचीला रुख अख्तियार करना जरूरी है। प्रस्तावित कानून के तहत अफगानिस्तान के सुरक्षा बलों को मजबूत करने और अमेरिकी सेना को हक्कानी नेटवर्क, तालिबान तथा अन्य समूहों के आतंकवादियों को निशाना बनाने का अधिकार देने पर भी जोर दिया गया है।

अमेरिकी प्रतिनिधि सभा अफगानिस्तान पर व्यापक राष्ट्रीय आम सहमति की समानांतर दिशा में आगे बढ़ रही है। इस बीच, विदेश विभाग की 'आतंकवाद पर 2016 की रिपोर्ट' के मुताबिक पाकिस्तान, अफगान तालिबान और हक्कानी नेटवर्क के खिलाफ कार्रवाई करने में नाकाम रहा है और ये आतंकी संगठन 'पाकिस्तान स्थित सुरक्षित आश्रय स्थलों से अपनी गतिविधियां जारी रखे हुए हैं।' तालिबान और हक्कानी नेटवर्क को भारत में आतंकी गतिविधियां चलाने वाले लश्कर-ए-तैयबा तथा जैश-ए-मोहम्मद जैसे आतंकी संगठनों के साथ संयुक्त रूप से 'ऐसे ग्रुप करार दिया गया है जो कि पाकिस्तान में स्थित हैं लेकिन उनका ध्यान देश से बाहर हमलों पर केंद्रित है।' रिपोर्ट में यह बात सामने आयी है कि पाकिस्तान सरकार लश्कर तथा जैश पर 'उनकी गतिविधियों के प्रचार पर रोक लगाने के अलावा' अन्य कोई बड़ी कार्रवाई नहीं करती है।

यह पहला अवसर है जब अमेरिकी विदेश विभाग, पेंटागन तथा अमेरिकी कांग्रेस पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित किये जा रहे सीमा पार के आतंकवाद के खिलाफ इस तरह खुलकर सामने आये हैं। ऐसे संकेत हैं कि अमेरिका पाकिस्तान के भीतर तालिबान तथा हक्कानी नेटवर्क के सुरक्षित आश्रय स्थलों पर नपे-तुले ड्रोन हमलों से गुरेज नहीं करेगा।

ट्रंप अमेरिकी लोगों के जीवन से संबंधित मुद्दों पर अपने सलाहकारों के मुकाबले कहीं ज्यादा सावधानी बरतते हैं। ऐसे में यह भी देखना होगा कि स्टीव बेनॉन जैसे एकांतवादी सलाहकार उन्हें कैसे प्रभावित कर पाते हैं। पिछले हफ्ते मुझे काबुल तथा अहमद शाह मसूद जैसे राष्ट्रीय प्रतीक के गढ़ खूबसूरत पंजशीर घाटी में चार दिन बिताने का मौका मिला। पंजशीर तालिबान विरोधी भावनाओं का गढ़ है।

यह तो जाहिर है कि घरेलू सैन्य तथा राजनयिक हालात चुनौतीपूर्ण तथा जटिल हैं। पाकिस्तान दायेश (आई एस आई एस) की भूमिका को जानबूझकर बढ़ा-चढ़ा कर पेश कर रहा है ताकि तालिबान और हक्कानी नेटवर्क के समर्थन में अपनी घातक भूमिका से ध्यान हटाया जा सके।

मेरे इस दौरे के दौरान काबुल के बीचोंबीच स्थित इराकी दूतावास पर आई एसआईएस ने इसलिए हमला किया ताकि मोसुल में इराकी सेना के हाथों मिली हार का बदला लिया जा सके।

इसके अगले दिन हेरात में ईरान की सीमा के करीब प्रसिद्ध शिया मस्जिद पर हमला कर 32 नमाज़ियों की हत्या कर दी गयी। इतना ही नहीं, कंधार के निकट एक आत्मघाती हमलावर ने अमेरिकी सेना के काफिले पर हमला कर दिया। इस हमले में सात जवानों की मौत हो गयी। प्रथम उपराष्ट्रपति राशिद दोस्तम पर बलात्कार के आरोप लगने तथा प्रभावशाली नेताओं द्वारा 'लोया जिरगा' की मांग किये जाने के चलते कुल मिलाकर अफगानिस्तान में आंतरिक स्थिति जटिल बनी हुई है। अफगानिस्तान की सबसे गंभीर चुनौती पाकिस्तान की ओर से पेश की जा रही है, जो कि अफगानिस्तान को तालिबान तथा हक्कानी नेटवर्क जैसे अपने प्रतिनिधियों के शासन वाला एक उपभोक्ता देश बनाने पर आमादा है।

ऐसा माना जा रहा है कि पाकिस्तान तालिबान और सरकार के बीच ऐसे संवाद को बढ़ावा देना चाहेगा, जिसमें दोनों 'बराबर के भागीदार' हों। चीन के साथ मिलकर अफगानिस्तान में 'सुलह' के रूसी प्रयासों को अफगानिस्तान की जनता ने वास्तव में अच्छा नहीं माना है। खासकर, जब रूस द्वारा हाल ही में तालिबान को हथियार सप्लाई किये जाने की खबरें सामने आयी हैं।

9/11 की घटना से पूर्व जहां ईरान ने तालिबान विरोधी 'उत्तरी गठबंधन' के लिए भारत का समर्थन किया था, वहीं हाल के दिनों में तालिबान के साथ अपने गुप्त संपर्कों के लिए ईरान को आलोचना का सामना भी करना पड़ा है क्योंकि तालिबान का पूर्व सुप्रीमो मुगा मंसूर ईरान से लौटते समय अमेरिका के ड्रोन हमले में मारा गया था।

ऐसी परिस्थितियों में अफगानिस्तान की जनता खुलेआम तथा उत्साहपूर्वक भारत के स्थिर आर्थिक, सैन्य तथा राजनयिक समर्थन का स्वागत करती है। इस सद्भावना की बड़ी वजह है भारत की ओर से दिया गया आर्थिक सहयोग। इसमें हेरात क्षेत्र के लिए पानी और सिंचाई सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए सलमा बांध का निर्माण, हाई वोल्टेज ट्रांसमिशन लाइन का निर्माण, ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों के रास्ते उज्बेकिस्तान से काबुल में बिजली लाना, स्कूली बच्चों के लिए मिड-डे-मील, देशभर में दर्जनों छोटी परियोजनाओं में मदद तथा हजारों अफगान छात्रों एवं पेशेवरों को प्रशिक्षण सुविधाएं उपलब्ध करवाना शामिल है।

भारत को अफगानिस्तान में जिन राजनयिक और सुरक्षा चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, उसकी मुख्य वजह है तालिबान को पाकिस्तान द्वारा बेशर्मी से दिया जा रहा समर्थन। कई चीजें दांव पर हैं।

अफगानिस्तान को पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकवाद के खिलाफ पूरी दुनिया में एक कड़ा कूटनीतिक अभियान चलाना होगा।

अफगानिस्तान को चीन तथा रूस जैसे अन्य देशों की ओर से तालिबान की स्वीकार्यता बढ़ाने के लिए दी जा रही मदद के खिलाफ भी समर्थन की दरकार है।

शुरुआती तौर पर ईरान में चाहबहार के रास्ते संपर्क बढ़ाने पर जोर दिया जाना चाहिए।

इतिहास को बख्श दें

देश की आजादी के लिए वर्ष 1942 में छेड़े गए 'भारत छोड़ो आंदोलन' के 75 वर्ष पूरे होने के अवसर को संसद में जिस तरह याद किया गया, उससे कई सवाल उठते हैं। यह सरकार और सभी राजनीतिक दलों के लिए एक प्रचार दिवस बनकर रह गया।

उन्होंने 'भारत छोड़ो' को एक ब्रांड की तरह लिया और उसकी तर्ज पर अपने-अपने आंदोलन शुरू करने की घोषणा की। खुद प्रधानमंत्री ने इसी तर्ज पर कई कार्यक्रम घोषित कर डाले। इस आंदोलन पर हुई चर्चा के बहाने सभी दलों में अपने-अपने नायकों और अपनी राजनीतिक लाइन को सही ठहराने की होड़ दिखी।

सबने अपनी-अपनी मर्जी से नेम ड्रॉपिंग की। अपनी पॉलिटिकल लाइन के हिसाब से 'भारत छोड़ो' के नेता चुने और छोड़ दिए। यह सूचना भी बाहर आ चुकी है कि राज्यसभा में चर्चा के प्रस्ताव के लिए बीएसी (बिजनस अडवायजरी कमिटी) की बैठक में सरकार की ओर से जो प्रस्ताव बांटा गया था, उसमें राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का ही नाम नदारद था। बैठक में शामिल विपक्षी सदस्यों की ओर से जब गांधी का नाम गायब होने की चर्चा उठी तो संसदीय कार्य राज्यमंत्री मुख्तार अब्बास नकवी को गलती का अहसास हुआ।

बैठक में कांग्रेस नेता आनंद शर्मा भी अपनी ओर से एक प्रस्ताव का मसविदा लेकर पहुंचे थे, जिसमें गांधी के नाम के अलावा स्वतंत्रता आंदोलन के तमाम पहलुओं को शामिल किया गया था।

प्रधानमंत्री ने जब संसद में बोलना शुरू किया, तो जवाहरलाल नेहरू का नाम ही गोल कर गए। कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने आरएसएस का नाम लिए बगैर इशारों में कहा कि इस संगठन का 'भारत छोड़ो आंदोलन' में कोई योगदान नहीं है।

लेकिन इसमें राममनोहर लोहिया और जयप्रकाश नारायण का भी कोई योगदान था, यह उन्हें याद नहीं आया। इसी तरह कम्युनिस्ट नेता यह सफाई देते रहे कि उनके नेताओं का इस आंदोलन में जबर्दस्त योगदान था। ऐतिहासिक तथ्यों की ऐसी खींचतान ने लोगों को असमंजस में डाल दिया कि आखिर वे किसे सही मानें?

दुनिया के और देशों के स्वतंत्रता आंदोलन और महापुरुषों को लेकर ऐसी असहमति शायद ही कभी देखी गई हो। भारत में इतिहास राजनीतिक विवाद का एक प्रमुख प्रश्न रहा है।

कांग्रेस और बीजेपी अक्सर एक-दूसरे की ऐतिहासिक भूलों की चर्चा करती रहती हैं। उन्हें समझना चाहिए कि जनता उनका आकलन उनकी वर्तमान गतिविधियों के आधार पर ही करती है। ऐसे में इतिहास में खुद को उजला दिखाने का प्रयत्न उनके साथ-साथ इतिहास को भी हास्यास्पद बना देता है।

संसद में किसी ऐतिहासिक अवसर को मनाने के ढंग पर पुनर्विचार किया जाना चाहिए। अच्छा होगा कि ऐसे अवसरों को एक उत्सव का रूप दिया जाए। शहीदों को श्रद्धांजलि दी जाए और ऐतिहासिक दस्तावेजों की प्रदर्शनी लगाई जाए।

अतीत को राजनीति से मुक्त करके ही हम अपने इतिहास को उचित सम्मान दे सकते हैं।

राशिफल

मेष : आर्थिक और व्यावसायिक दृष्टि से आज का दिन लाभदायक रहेगा। लंबे समय का आर्थिक आयोजन पूरा कर सकेंगे। व्यवसाय में भी योजनाएं बना सकेंगे। परोपकार के उद्देश्य से किए गए कार्य से आपका मन प्रफुल्लित रहेगा। स्वास्थ्य बना रहेगा।

वृषभ : परिश्रम के अनुपात में अल्प परिणाम मिलने पर भी आप निष्ठापूर्वक कार्य को आगे बढ़ाएंगे। आपके क्षेत्र की विशालता और वाणी की मधुरता अन्य लोगों को प्रभावित करेगी और उसके द्वारा लाभ प्राप्त कर सकेंगे। मृदुवाणी नए सम्बंध स्थापित करने में सहायक बनेंगे।

मिथुन : गणेशजी कहते हैं कि अत्यधिक भावुकता आपके मन को संवेदनशील बनाएगी। विशेष रूप से जलाशय और स्त्रीवर्ग से सचेत रहना पड़ेगा। मन की परिस्थिति डावांडोल रहने के कारण निर्णयशक्ति का अभाव रहेगा। माताजी की तबीयत के विषय में चिंता होगी।

कर्क : गणेशजी बताते हैं कि आज कार्य सफलता आपकी राह देख रही है। इसके कारण आपका आनंद उत्साह दोगुना होगा। ताजगी और प्रसन्नता का अनुभव होगा। मित्रो, सगे-सम्बंधियों के साथ मुलाकात और प्रवास पर्यटन पर जाने का कार्यक्रम बनेगा। भाग्यदेवी का प्रबल सहयोग आपको मिलेगा। कार्यक्षेत्र में प्रतिस्पर्धी पराजित होंगे।

सिंह : गणेशजी के बताए अनुसार आपका दिन मिश्रित फलदायी रहेगा। लंबी अवधि के आयोजन आपको दुविधा में डालेंगे। कार्य में निर्धारित सफलता नहीं मिलेगी। परिवार में मेल-मिलाप का वातावरण रहेगा।

कन्या : आपकी वाणी का माधुर्य नए सौहार्दपूर्ण सम्बंध स्थापित करने में उपयोगी साबित होंगा। वैचारिक समृद्धि बढ़ेगी। व्यापार-धंधे में लाभ के साथ सफलता मिलेगी। शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य भी बना रहेगा। मित्रों एवं स्नेहीजनो के साथ मुलाकात होगी।

तुला : आज आपको स्वास्थ्य के विषय में ध्यान रखना पड़ेगा। मानसिक स्वस्थता भी कम रहेगी। अविचारी और मनमाना व्यवहार आपको मुसीबत में डाल सकता है। वाणी पर संयम रखना पड़ेगा अन्यथा किसी के साथ झगड़े-फसाद होने की संभावना है।

वृश्चिक : गणेशजी के आशीर्वाद से नौकरी-धंधा और व्यवसाय के क्षेत्र में आपको लाभ ही लाभ है। इसके साथ मित्रों, सगे- सम्बंधियों और बुजुर्गों की तरफ से भी लाभ प्राप्ति का संकेत है।

धनु : गणेशजी कहते हैं कि आज आपकी यश, कीर्ति और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्यक्षेत्र में उच्च पदाधिकारियों के खुश रहने से पदोन्नति की संभावना बढ़ेगी। स्वास्थ्य बना रहेगा।

मकर : गणेशजी कहते हैं कि बौद्धिक कार्य या साहित्य लेखन जैसी प्रवृत्तियों के लिए आज अनुकूल दिन है। आपने व्यवसाय में नई विचारधारा से कार्यों को नया स्वरूप देंगे।

कुंभ : गणेशजी आपको आज निषेधात्मक कार्यों और नकारात्मक विचारों से दूर रहने की सलाह देते हैं। झगड़े-विवाद से बचें, क्रोध और वाणी पर संयम रखें। पारिवारिक वातावरण कलुषित रहेगा।

मीन : गणेशजी कहते हैं कि दैनिक कार्यों से बाहर निकलकर आज आप घूमने-फिरने और मनोरंजन के पीछे समय बिताएंगे। स्वजनों तथा मित्रों के साथ पिकनिक पर जा सकते हैं। सिनेमा, नाटक या बाहर भोजन करने जाने का कार्यक्रम आपको आनंदित करेंगा।

शब्द सामर्थ्य Shabd Samarth

बाएं से दाएं

1. संघर्ष, दौड़धूप (उर्दू.) 5. सुपुत्र, लायक पुत्र 7. ताकतवर, बलशाली 9. खुशबू, सुरभि, सुगंध 10. अकारण, व्यर्थ, बेवजह 12. गर्म तेल आदि में खाद्य वस्तु छोड़कर पकाना 13. यात्रा 15. मृत, जो मर गया हो 16. छोटे कद का, वामन, बौना 18. सांप का सिर, गुण, कला, कौशल 20. निरुत्तर, बेमिसाल 23. गोल हरे दानों वाला एक प्रसिद्ध पौधा, या इस पौधे की फली 24.माता, जननी 25. संतान, औलाद 26. अधीन, अधीनस्थ, कर्मचारी 27. चिड़िया, खग तरफदार।

ऊपर से नीचे

1.पानी में डूबा हुआ, जल प्लावित 2. पाकेटमार, जेब काटने वाला 3. समाधान, खेत जोतने का यंत्र 4. औषधालय 6. युक्ति, उपाय 8. गीला, तर, भीगा हुआ 11. झटके से मुंह से आवाज के साथ हवा बाहर आना, बलगम आदि का बाहर आना 14. तुरंत, झटपट 15. स्त्री, नारी, अबला 17. एक और एक चौथाई 19. आदमखोर 21. दुनिया, संसार, जग 22. वर्ष की छः ऋतुओं में एक ऋतु जिसमें मौसम सुहावना रहता है 23. बुद्धि, दिमाग।

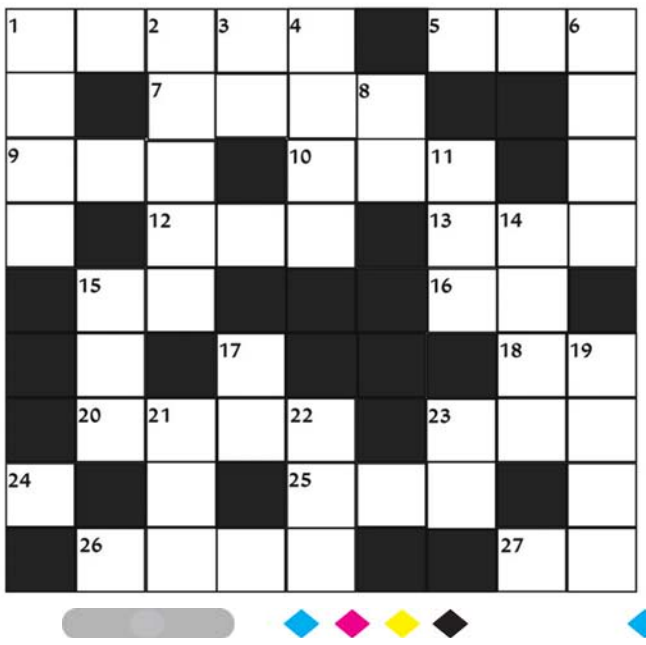

पिछले अंक का हल

पी	चि	दं	ब	र	म	■	■	स
ट	■	भ	ला	ई	■	अ	स	म
ना	म	■	■	स	मा	धि	■	झ
■	ज	■	बे	■	न	का	र	ना
बा	बू	■	आ	य	क	र	■	■
■	र	की	ब	■	■	■	प्र	था
ज	■	■	रू	प	क	■	ज	न
हा	■	पा	■	ना	म	ची	न	■
ज	हां	प	ना	ह	■	ता	न	ना

सू-दोकू

	1			4			7	
		6	9		2			1
	7			6		8		2
1							8	
	8			5		2		3
3		2			4		1	
	3		2			4		
		8		1	6			7
9			4				2	

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

पिछले अंक का हल

3	9	6	8	2	5	4	7	1
8	2	5	1	7	4	6	3	9
7	1	4	6	9	3	8	2	5
1	8	9	3	6	7	2	5	4
2	6	7	5	4	8	1	9	3
5	4	3	9	1	2	7	8	6
6	7	2	4	3	9	5	1	8
9	5	1	7	8	6	3	4	2
4	3	8	2	5	1	9	6	7